21
WEDNESDAY

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

1) नाटककार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक माने जाते हैं। गद्य क्षेत्र में भारतेन्दु का स्थान सर्वप्रथम नाटकों को और गया। उनकी नाटकीय रचनाएँ तीन भागों में विभक्त की जा सकती हैं —

22
THURSDAY

I अनूदित
II मौलिक
III अपूर्ण

उनके नाटकों का विषय प्रायः सामाजिक धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय और राजनीतिक हैं।

Scanned with CamScanner

23 FRIDAY

उनके अनूदित नाटक अनूदित न होकर रूपांतर ज्यादा है :-

उनको

24 SATURDAY

उनकी मौलिक नाट्य रचनाएँ हैं :-

1) वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (1873)
2) सत्य हरिश्चन्द्र (1875)
3). श्री चन्द्रावली (1876)
4) विषस्य विषमौषधम (1876)
5) भारत दुर्दशा (1880)
6) नीलदेवी (1881)

7) अंधेर नगरी

25
SUNDAY

वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति,
सत्य हरिश्चन्द्र, भारत-दुर्दशा तथा अंधेर नगरी जैसे नाटक रंगमंचीय दृष्टि से अत्यंत सफल रहे हैं।

वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति

26
MONDAY

यह भारतेन्दु द्वारा रचित एक प्रहसन है। अर्थात परिहासपूर्ण शैली में लिखा गया नाटक है। इसका सर्वप्रथम प्रकाशन सन् 1873 में हुआ था। आकार-प्रकार छोटा होने के कारण इसे एकांकी कोटि में भी रखा जा सकता है।

27 TUESDAY

प्रस्तुत प्रसंग में हिंदू धर्म में व्याप्त विन्यस्त मांस भक्षण, शराब सेवन तथा अन्य तरह के भ्रष्ट आचरण पर करारा व्यंग्य है। मंदिर और मठों में फैले अनाचार को यह प्रसंग हमें आत्मालोचना के लिए प्रेरित करता है।

---

28 WEDNESDAY

हास्य और व्यंग्य का अद्भुत संयोग इस प्रसंग की अन्यतम विशेषता है।

Scanned with CamScanner

जयशंकर प्रसाद

29 THURSDAY

1) नाटककार जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रथम व्यवस्थित और विशुद्ध नाटककार हैं। इनके नाटकों की संख्या बारह हैं।

1) सज्जन (1910-11)

30 FRIDAY

2) कल्याणी परिणय (1912)

3) प्रायश्चित (1914)

4) राज्यश्री (1918)

5) विशाख (1921)

6) कामना (1927)

7) जनमेजय का नागयज्ञ (1926)

Scanned with CamScanner

31 SATURDAY

8) स्कन्दगुप्त (1928)

9) एक घूंट (1930)

10) चन्द्रगुप्त (1931)

11) ध्रुवस्वामिनी (1933)

प्रसाद के नाटकों की विषय वस्तु

जयशंकर प्रसाद के आधिकांश नाटक ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि के है। इन

01 SUNDAY JUN

नाटकों में प्रसादजी की सांस्कृतिक चेतना अद्भुत रूप से सामने आयी है। जयशंकर प्रसाद जी अपने नाटकों में इतिहास के माध्यम से भारत के अतीत की सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करते है।

Scanned with CamScanner

भारत का एक दार्शनिक - सारांश

भारत का एक दार्शनिक जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध नाटक चन्द्रगुप्त के प्रथम अंक का ग्यारहवाँ दृश्य है। चन्द्रगुप्त नाटक में उस युग की दो सभ्यताओं भारत और यूनान के बीच संघर्ष को दर्शाया गया है।

भारत एक दार्शनिक एकांकी में दाण्ड्यायन द्वारा भारत की श्रेष्ठता की घोषणा की गयी है। दोनों सभ्यताओं के संघर्ष में दाण्ड्यायन और चाणक्य भारतीय पक्ष के प्रतिनिधि है। अंत में भारतीय संस्कृति की विजय होती है।

Scanned with CamScanner

04
WEDNESDAY

दाण्ड्यायन की निर्भीक वाणी में भारतीय संस्कृति का गौरव है। वह चन्द्रगुप्त के विषय में भविष्यवाणी करता हुआ अलक्षेन्द्र से कहता है कि यह भारत का भावी सम्राट तुम्हारे सामने बैठा है। राष्ट्रीय भावना और

05
THURSDAY

सांस्कृतिक चेतना की छाया चन्द्रगुप्त में सर्वत्र देखी जा सकती है।

Scanned with CamScanner

5) जगदीश चन्द्र माथुर

06
FRIDAY

जगदीश चन्द्र माथुर मूल रूप से नाटककार है, आधुनिक नाटक को एक निश्चीत ऊँचाई प्रदान करने में इनका भारी योगदान रहा है। इनके प्रमुख नाटक है :—

1) भोर का तारा (1940)

07
SATURDAY

2) कोणार्क (1950)
3) ओ मेरे सपने (1950
4) शारदीया (1959)
5) पहला राजा (1970)

उनके नाटक समसामायिकता का परिचय

Scanned with CamScanner

08
SUNDAY

कराते हैं। इसके लिए नाटक संस्कृति का सहारा लेता है।
माथुर जी कथाकी लेखन में भी सिद्धहस्त है। और कथा तारा रीढ़ की हड्डी उनके प्रमुख कथाकी है।

रीढ़ की हड्डी

09
MONDAY

रीढ़ की हड्डी आधुनिक - चेतना को प्रखरता दर्शानेवाला नाटक है।
समाज के भीतर बदलते रिश्तों और मानवीय संबंधों को माथुर साहब ने इस कथाकी में अत्यंत संजीदगी से प्रस्तुत किया है।

Scanned with CamScanner

रामकुमार वर्मा

रामकुमार वर्मा आधुनिक हिन्दी एकांकी के जनक कहा जाता है। बादल की मृत्यु इनका सर्वप्रथम एकांकी नाटक था, जो 1930 में प्रकाशित हुआ था इसके बाद डॉ वर्मा ने दस मिनट

नहीं का रहस्य, पृथ्वीराज की आँखें, औरंगजेब की आखिरी रात, चंपक और रूपहेस आदि एकांकियों की रचना की। उनके रेशमी टाई एकांकी के उपरान्त डॉ वर्मा एक ऐतिहासिक एकांकीकार के रूप में विकसित होने लगे।

Scanned with CamScanner

12 THURSDAY

पृथ्वीराज की आँखें

पृथ्वीराज की आँखें रामकुमार वर्मा का अत्यंत प्रसिद्ध, बहुचर्चित और लोकप्रिय एकांकी है। इसकी कथावस्तु ऐतिहासिक है। इस एकांकी में मुहम्मद गौरी, पृथ्वीराज और महाकवि चंदरबरदायी के चरित्रों के माध्यम से पृथ्वीराज के पराक्रम और शौर्य का उद्घाटन किया गया है। सधर्म संवाद नाटक की विशेषता है।

13 FRIDAY

Scanned with CamScanner

14
SATURDAY

भुवनेश्वर

हिन्दी एकांकी दिशा बदलने में भुवनेश्वर ने अग्रणी भूमिका निभाई है। भुवनेश्वर ने हिन्दी में पाश्चात्य शैली के एकांकी की परंपरा चलायी। उनके आरम्भिक प्रमुख एकांकियाँ इसप्रकार हैं:—

15
SUNDAY

1) श्यामा- एक वैवाहिक विडम्बना (1933)
2) शैतान - (1934)
3) एक साम्यहीन साम्यवादी (1934)
4) प्रतिभा का विवाह (1933)
5) रहस्य रोमांच (1935)
6) लाटरी (1935)

14 SATURDAY

भुवनेश्वर

हिन्दी एकांकी दिशा बदलने में भुवनेश्वर ने अग्रणी भूमिका निभाई है। भुवनेश्वर ने हिन्दी में पाश्चात्य शैली के एकांकी की परंपरा चलायी। उनके आरम्भिक प्रमुख एकांकियाँ इस प्रकार हैं:-

15 SUNDAY

1) श्यामा - एक वैवाहिक विडम्बना (1933)
2) शैतान - (1934)
3) एक साम्यहीन साम्यवादी (1934)
4) प्रतिभा का विवाह (1933)
5) रहस्य रोमांच (1935)
6) लाटरी (1935)

Scanned with CamScanner

16 MONDAY

भुवनेश्वर के दूसरे चरण की एकांकियों में विषय का विस्तार अधिक देखने को मिलते है। मृत्यु, हम, अकेले नहीं, तन्वा सवा आठ बजे, स्ट्राइक, असर आदि ऐसी ही एकांकी हैं। इन एकांकियों में यौन समस्या तन्वा प्रेम के त्रिकोण से ऊपर उठकर

17 TUESDAY

वे समाज के दुःख दर्द को भी देखने लगे थे।

भुवनेश्वर की एकांकी रचनाएँ बड़ी सशक्त हैं। उनका सबसे पहला आकर्षण उनके काव्यात्मक, व्यंजनापूर्ण, मर्मस्पर्शी और कभी-कभी चुभती शैली में लिखित रंग निर्देश हैं।

Scanned with CamScanner

ऊसर

18 WEDNESDAY

ऊसर भुवनेश्वर की बहुचर्चित एकांकी है। इसका प्रकाशन सन 1938 में हुआ था। मध्यवर्गीय जीवन का अद्भुत रूप में इसमें दर्शाया गया है। एकांकी में वाद - विवाद का रचनात्मक प्रयोग भुवनेश्वर ने किया है।

19 THURSDAY

1. मध्यवर्गीय जीवन में पारंपारिक विश्वासों, आस्थाओं, संबंधों तथा स्नेहों के समाप्त हो जाने की समस्या की वर्णन है और एकांकी संकेत करती है। इसके कारण आज के मध्य वर्गीय मनुष्य का जीवन नीरस तथा ऊसर हो गया है। जैसे सूखा जीवन में लोग अपनी जिन्दगी सिर्फ ढोये जा रहे है।"